॥ श्री ॥
॥ बाबा ॥

मेरे बाबा के क्या गुन गाऊं
वो है तो ये जीव जिवित है
कैसे रहते है लोग बाबा बिना
ये सोच मन मेरा घबराए ॥धृ॥

जब रहती हूँ मै एकांत मे
देखती हू बाबा को सामने
करती हूँ बाबासे बाते अनेक
बाबा तुम भी मेरे साथ बाते करो
एक दुसरे से बाते करके
मन का रिश्ता बढ जाता है ॥1॥

बाबा हैं ये संसार बहोत मतलबी
हरकोई सोचे अपनाही
हैं प्रेम सगे बहेन –भाई मे
कुछ पाने के लिए अपने हित का
देखके ये हालत संसार की
दूर चार हाथ रहूँ मन चाहे ॥2॥

बाबा क्यूं हैं पढाई की किताबे
क्यू बाबानाम नही उसमे
किताब खोलू तो बाबाही सामने
बंद करदू तो मन धून गाये
बाबा समझादो पागल मन को
उसमे नही हित है तेरा रे ॥3॥

बाबा सुना हैं मैने मेरे बचपन से
अति किया तो फल- बुरा होता है
बाबा हैं विनंती इस देह की
बढनेवाले प्यार के बारे मे
इस प्यार का फल तो मिठा हो
किसी पापी की नजर इसे ना लगे ॥4॥

★★★★★